कक्षा-11 एवं 12

हिंदी व्याकरण

रचना और साहित्य

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड ।

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 26.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पठ्य-पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा सनराईज प्लास्टिक वर्क्स, सायंस कॉलेज के सामने, पटना-6 द्वारा एच०पी०सी० के 70 जी०एस०एम० क्रीम वोम (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर कुल 5,000 प्रतियाँ 24 × 18 सेमी आकार में मुद्रित ।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई 2007 से राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा - XI-XII) हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है । नए पाठ्यक्रम के आलोक में भाषा की पुस्तकों का विकास एस० सी० ई० आर० टी०, पटना द्वारा तथा आवरण डिजाइनिंग एवं मुद्रण बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम के द्वारा किया गया है । यह पुस्तक उसी शृंखला की एक कड़ी है ।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा - I-XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तीकरण के लिए कृतसंकल्पित शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग-निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ हैं ।

हमें आशा है कि यह पुस्तक राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होगी । एस० सी० ई० आर० टी० के निदेशक के हम आभारी हैं, जिनके नेतृत्व में इस पुस्तक को विकसित किया गया ।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक शिक्षार्थी के ज्ञानवर्धन एवं उपलब्धि-स्तर की वृद्धि में सहायक होगी । संवर्द्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सदैव भविष्य की गोद में सुरक्षित रहती हैं । प्रकाशन एवं मुद्रण में निरंतर अभिवृद्धि के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके ।

हसनैन आलम, भा० प्र० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम लि०

संरक्षण

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।
श्री सैय्यद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना ।

सदस्य, हिंदी भाषा समूह

श्री आशुतोष पार्थेश्वर, व्याख्याता, हिंदी विभाग, ओरियंटल कॉलेज, मगध विश्वविद्यालय, पटना ।
श्री ब्रजेश पांडेय, हिंदी विभाग, एल० पी० शाही कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय) पटना ।
डॉ० सत्येंद्र कुमार पाठक 'प्रियेश', एकलव्य एजुकेशनल कॉम्प्लेक्स, पटेल नगर, पटना ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

डॉ० जगदीश नारायण चौबे, अ० प्रा० प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० सुखदा पांडेय, प्राचार्य, मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
डॉ० सतीश कुमार राय, हिंदी विभाग, बी० आर० अंबेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।

अकादमिक सहयोग

श्री वीरेंद्र कुमार रावत, मैनेजर, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
डॉ० कासिम खुर्शीद, अध्यक्ष, भाषा शिक्षा, शिक्षा विभाग, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
डॉ० कल्याण कुमार झा, हिंदी विभाग, बी० आर० अंबेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।
डॉ० रमेश प्रसाद गुप्ता, हिंदी विभाग, आर० डी० एस० कॉलेज, बी० आर० अंबेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।
डॉ० सुरेंद्र कुमार, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
डॉ० स्नेहाशीष दास, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।
डॉ० इम्तियाज आलम, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट), एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर तैयार की गई है। इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि ''शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें, और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।'' राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 हमें बताती हैं कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी होनी चाहिए। आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित शिक्षार्थी केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएगा।

इस पुस्तक में किशोरियों-किशोरों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनका उत्तर पाने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है। निश्चय ही इसमें शिक्षार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों की भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका होनी चाहिए। शिक्षार्थियों के प्रति संवेदना और सहानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी।

एस० सी० ई० आर० टी० सर्वप्रथम बिहार के मुख्यमंत्री माननीय श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के माननीय मंत्री श्री हरिनारायण सिंह एवं प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह और साथ ही इस पुस्तक के विकास के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक विकास समिति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है। हिंदी भाषा समूह के अध्यक्ष प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, समन्वयक डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सदस्य श्री आशुतोष पार्थेश्वर, श्री ब्रजेश पाण्डेय और डॉ० सत्येन्द्र कुमार पाठक 'प्रियेश' के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं। इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया। डॉ० जगदीश नारायण चौबे, डॉ० सुखदा पांडेय एवं डॉ० सतीश कुमार राय ने पुस्तक-निर्माण की प्रक्रिया में समय-समय पर अपने रचनात्मक सुझावों और परामर्शों से हमें लाभान्वित किया, एतदर्थ हम इनके भी आभारी हैं। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति के अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी के प्रति भी हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। श्री त्रिपाठी की एकनिष्ठ सक्रियता का ही परिणाम है कि यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँच सकी है। पुस्तक की कंपोजिंग, पेज मेकिंग और टाइप सेटिंग के लिए **एरिश कंप्यूटर, रमना रोड, पटना के अखिलेश कुमार** और **मुदस्सर नजर** बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक आपके हाथों में है। इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहेगी।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

यह पुस्तक

'हिंदी व्याकरण, रचना और साहित्य रूप' नामक यह पुस्तक सामान्य रूप से बिहार के उच्च विद्यालय के छात्रों के लिए, विशेषकर वर्ग एकादश द्वादश के छात्रों के लिए, तैयार की गई है। इस पुस्तक का स्वरूप निर्धारण और निर्माण सरकार की नई शिक्षा नीति के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम के अंतर्गत किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम और उसके अनुरूप इस पुस्तक का स्वरूप निर्धारण और विकास बिहार सरकार द्वारा एस० सी० ई० आर० टी०, पटना के तत्त्वावधान में आयोजित अनेक कार्यशालाओं में हुआ है। नवीन पाठ्यक्रम में हिंदी की मुख्य और सहायक पाठ्यपुस्तकें बदल गई हैं। नई पुस्तकों का अनेक कार्यशालाओं और विमर्श प्रक्रियाओं के दौरान विकास हुआ है। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में आमूल बदलाव को देखते हुए हिंदी व्याकरण, रचना और साहित्य के कुछ प्रमुख रूप और तत्त्वों की एक स्वतंत्र और नवीन परिचयात्मक पुस्तक की आवश्यकता अनुभव की गई। प्रस्तुत पुस्तक इसी आवश्यकता की उपज है।

इस पुस्तक के निर्माण और विकास में प्राथमिक रूप से दो बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। प्रथमतः बिहार के छात्रों का, जो मूलतः हिंदी भाषी हैं; किंतु मैथिली, अंगिका, मगही, भोजपुरी आदि के प्रगाढ़ वैभाषिक संस्कारों के बीच से अपनी हिंदी के साथ विकसित होते हुए आगे बढ़ते हैं। हिंदी के मानक, परिनिष्ठित और जीवंत रूपों और प्रयुक्तियों के प्रति प्रायः उनमें एक उदासीनता, लापरवाही या अनुत्साह की मानसिकता लक्षित की जाती रही है। प्रायः वयस्क या प्रौढ़ होकर भी वे अपने वैभाषिक संस्कारों की सीमाओं से उबर नहीं पाते। स्वभावतः व्याकरण, रचना और साहित्य के रूपों और तत्त्वों से यदि ऐसा परिचय और संबंध विकसित किया जा सके जो आरंभ से ही उनमें हिंदी भाषा-साहित्य के प्रति सजगता और जागरूकता के संस्कार डाले तो वैभाषिक सीमाओं से एक हद तक उबरा जा सकता है। इतना ही नहीं, अपने वैभाषिक आधारों की शक्ति और सुविधाओं का अपनी हिंदी के हित, परिष्कार और समृद्धि के लिए रचनात्मक उपयोग भी किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक इस बिंदु को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। दूसरी बात यह है कि इस पुस्तक के निर्माण और विकास में हिंदी भाषा और साहित्य के आधुनिक एवं समसामयिक मानक रूपों प्रयुक्तियों और प्रवाहों को विशेष रूप से ध्यान में रखा गया है। आज के भाषा शिक्षण में आज की भाषा के स्वरूप, प्रवाह, गतिभंगिमा और संस्कारों को निकष की तरह बरतना होगा। आज की हिंदी हिंदीतर भारतीय और विदेशी प्रसार तथा बहुव्यापी प्रयोजनों की भाषा बन गई है। हिंदी के इस व्यापक रूप की अनदेखी न उचित है और न संभव ही।

यह पुस्तक व्याकरण, रचना और साहित्य के रूपों और तत्त्वों की है; स्वभावतः इसमें विज्ञों और अनुभवों के सुझावों की तथा उन सुझावों के अनुरूप सुधार परिष्कार और परिवर्धन की गुंजाइश हमेशा बनी रहेगी।

हेमंत कुमार हिमांशु
समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

भृगुनंदन त्रिपाठी
अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

अनुक्रमणी

1. परिचय 9

भाषा, स्वरूप, भाषा के अंग, व्याकरण, व्याकरण के अंग, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान, भाषा-भेद, भाषा-उपभाषा-सहभाषा और विभाषा, भारतीय भाषाएँ, हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, हिंदी भाषा का क्षेत्र, हिंदी संज्ञा विधान ।

2. वर्ण विचार 13

वर्ण, वर्ण भेद, मात्राएँ, संयोग, बलाघात, सुरलहर, संधि ।

3. शब्द विचार 28

शब्द, शब्द भेद, शब्द संरचना, उपसर्ग, प्रत्यय ।

शब्द और रूप : विकारी, अविकारी, संज्ञा, संज्ञा के रूपांतर, लिंग, वचन, कारक, पुरुष; सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, काल, वाच्य । अव्यय, क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात । समास ।

4. वाक्य विचार 69

वाक्य, पदक्रम, अन्वय, वाक्य के अंग, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, वाक्य संश्लेषण ।

5. चिह्न विचार 79

6. वर्तनी 84

7. रचना-परिचय 85

अनेकार्थक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, पर्यायवाची शब्द ।

मुहावरे, कहावतें, संक्षेपण, पल्लवन, अनुच्छेद, भावार्थ, आशय, सारांश, व्याख्या, निबंध, पत्र ।

8. साहित्य के रूप 97

काव्य, दृश्यकाव्य, नाटक, काव्यनाटक, एकांकी, रेडियोनाटक, नुक्कड़ नाटक, चलचित्र ।

श्रव्यकाव्य, प्रबंधकाव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य ; मुक्तक, गीत, प्रगीत, गद्यकविता, चंपूकाव्य ।

गद्य साहित्य, कथा साहित्य, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्तांत, निबंध, व्यंग्य, रिपोर्ताज, शब्द चित्र, डायरी, साक्षात्कार, आलोचना, समीक्षा, पत्र, साहित्य के अन्य रूप ।

9. काव्य के तत्त्व 110

छंद, अलंकार, शब्दशक्ति, काव्यगुण, रस, साधारणीकरण, सहृदय, काव्य रीति, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, रूपवाद, आधुनिकता, उत्तरआधुनिकता, संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, प्रतीक, बिंब ।

कक्षा - 11

1. परिचय : भाषा, स्वरूप, भाषा के अंग, व्याकरण, व्याकरण के अंग, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान ।
2. वर्ण विचार : वर्ण, वर्णभेद, मात्राएँ, संयोग, बलाघात, सुरलहर, संधि ।
3. शब्द विचार : शब्द, शब्दभेद ।
   शब्द और रूप : विकारी, अविकारी, संज्ञा, संज्ञा के रूपांतर, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, काल, अव्यय, क्रियाविशेषण, निपात ।
4. वर्तनी
5. रचना परिचय : अनेकार्थक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, पर्यायवाची शब्द, मुहावरे, कहावतें, संक्षेपण, निबंध, पत्रलेखन ।
6. साहित्य के रूप : काव्य, दृश्यकाव्य, नाटक, काव्यनाटक, एकांकी, रेडियोनाटक, नुक्कड़ नाटक, चलचित्र । श्रव्यकाव्य, प्रबंधकाव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य; मुक्तक, गीत, चंपूकाव्य। गद्य साहित्य, कथासाहित्य, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, शब्दचित्र, निबंध ।
7. काव्य के तत्त्व : छंद, अलंकार, शब्दशक्ति, रस, साधारणीकरण, सहृदय ।

कक्षा - 12

1. परिचय : भाषा-भेद, भाषा-उपभाषा-सहभाषा और विभाषा, भारतीय भाषाएँ, हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, हिंदी भाषा का क्षेत्र, हिंदी संज्ञा विधान ।
2. वर्ण विचार : संधि ।
3. शब्द विचार : शब्द संरचना, उपसर्ग, प्रत्यय ।
   शब्द और रूप : पुरुष, वाच्य, समास ।
4. वाक्य विचार : वाक्य, पदक्रम, अन्वय, वाक्य के अंग, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, वाक्य संश्लेषण ।
5. चिह्न विचार
6. रचना परिचय : अनेकार्थक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, पर्यायवाची शब्द, मुहावरे, कहावतें, संक्षेपण, पल्लवन, अनुच्छेद, भावार्थ, आशय, सारांश, व्याख्या, निबंध, पत्रलेखन ।
7. साहित्य के रूप : प्रगीत, गद्यकविता, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, व्यंग्य, रिपोर्ताज, डायरी, साक्षात्कार, आलोचना, समीक्षा, पत्र, साहित्य के अन्य रूप ।
8. काव्य के तत्त्व : काव्यगुण, काव्य रीति, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, रूपवाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, प्रतीक, बिंब ।